

चित्रकारों के लिए पेंटिंग कार्यशाला एक अवसर : कर्मा जिंपा भूटिया

रांची. इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट्स (आइजीएनसीए, रांची) और डॉ रामदयाल मुंडा जनजातीय शोध संस्थान मोरहाबादी की ओर से सोमवार से दस दिवसीय पेंटिंग कार्यशाला शुरू हुई. झारखंड की तीन विशिष्ट चित्रकला शैली सोहराई, जादूपेटिया और पेटकार से जुड़े दस चित्रकार शामिल हो रहे हैं. टीआरआई के डायरेक्टर कर्मा जिंपा भूटिया ने कहा कि चित्रकारों के लिए भगवान बिरसा मुंडा के जीवन पर आधारित पेंटिंग कार्यशाला एक अवसर है. पेंटिंग बनाते समय अपना सर्वश्रेष्ठ दीजिए. डिप्टी डायरेक्टर मोनिका रानी टूटी ने कहा कि झारखंड की पारंपरिक चित्रकला के माध्यम से बिरसा मुंडा की जीवनी को समझने का प्रयास है. आइजीएनसीए रांची के क्षेत्रीय



निदेशक डॉ कुमार संजय झा ने कहा कि यह कार्यशाला बिरसा मुंडा के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को कैनवास पर उतारते हुए उनके संघर्ष, विचारधारा व सामाजिक योगदान से परिचित करायेगी. कार्यशाला के क्यूरेटर व चित्रकार सीआर हेंब्रम ने कहा कि देशभर में यह इस तरह का पहला प्रयोग है. डीएसपीएमयू के पूर्व कुलपति डॉ एसएन मुंडा व कमल बोस ने भी प्रतिभागियों को संबोधित किया.

कैनवास पर जीवंत होगी उलगुलान की गाथा, टीआरआई में 10 दिवसीय कार्यशाला शुरू

सोहराई व जादोपटिया में दिखेगा बिरसा का जीवन

सिटी रिपोर्टर • रांची

हमारे झारखंड की माटी के महानायक और जल-जंगल-जमीन की लड़ाई के प्रतीक 'धरती आबा' भगवान बिरसा मुंडा का गौरवशाली इतिहास अब कैनवास पर मुखुराएगा। मौका है मोरहाबादी स्थित डॉ. रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान (टीआरआई) के सभागार में सोमवार से शुरू हुई विशेष 10 दिवसीय चित्रकला कार्यशाला का। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र व टीआरआई के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित यह अनूठी कार्यशाला 27 मई 2026 तक चलेगी। इसका मुख्य उद्देश्य झारखंड की पारंपरिक लोक कला शैलियों के जरिए भगवान बिरसा मुंडा के जीवन, उनके उलगुलान और वैचारिक क्रांति को नई पीढ़ी के सामने लाना है। प्रो. एसएन मुंडा व डॉ. सोमा सिंह मुंडा ने कलाकारों से अपील की कि वे अपनी कुची भगवान बिरसा मुंडा के जीवन को सकारात्मक ऊर्जा और मानवीय संवेदनाओं को जीवंत करें। उनके हर पहलू को आकार दें।



क्यों खास है यह अनूठा आर्ट एक्सपेरिमेंट

पहली बार अनूठा प्रयोग: अभूतन महापुरुषों के चित्र आधुनिक या ऑयल पेंटिंग में बनते हैं, लेकिन यह भारत के उन गिने-चुने प्रयोगों में से है जहां विशुद्ध जनजातीय शैलियों में पूरी जीवनी उकेरी जा रही है।

पारंपरिक विधाओं का संगम: कार्यशाला में राज्य की विभिन्न होती और समृद्ध कला विधाओं जैसे—सोहराई, जादोपटिया, पैतकर और उरांव चित्रकला के जरिए भगवान बिरसा की जीवनी को नए रंग दिए जा रहे हैं।

स्वदेशी रंगों में ढलेगी 'धरती आबा' की विरासत

कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए टीआरआई के निदेशक कर्मा जिम्पा भूटिया ने कहा कि "चित्रकला समाज में ऐतिहासिक समझ को गहरा करने का सबसे सशक्त माध्यम है। यहां बनने वाली कलाकृतियां भगवान बिरसा मुंडा के सामाजिक प्रभाव को बेहद सजीव तरीके से पेश करेंगी।" उपनिदेशक मोनिका रानी टूटी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि सोहराई, जादोपटिया व पैतकर जैसी स्वदेशी कलात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से बिरसा मुंडा की विरासत को चित्रित करने का ऐसा सामूहिक प्रयास राज्य में पहले कभी नहीं हुआ।



1200 मीटर लंबे 'महाभारत स्कॉल' जैसा दिखेगा जादू
आईजीएनसीए के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. कुमार संजय झा ने बताया कि इससे पहले राठवा जनजाति के कलाकारों ने 1200 मीटर लंबा 'महाभारत स्कॉल' तैयार किया था, जो देश-दुनिया में सराहा गया। ठीक उसी तर्ज पर रांची में हो रहा यह प्रयोग भगवान बिरसा के आदर्शों को समाज के दिलो-दिमाग तक पहुंचाएगा।

माटी के ये मशहूर फनकार कैनवास पर बिखेर रहे हैं जादू
वरिष्ठ कलाकार सीआर हेमब्रम के वर्येशन में चल रही इस कार्यशाला में राज्य के कोने-कोने से आए प्रतिष्ठित पारंपरिक कलाकार हिस्सा ले रहे हैं: **पैतकर शैली:** शालिनी सोय, किशोर गायन और गणेश गायन। जादोपटिया **शैली:** सुधा कुमारी, सुचित्रा हेमब्रम और विद्यासा कुमारी। **सोहराई शैली:** मनीष महतो और अनीता देवी। **उरांव चित्रकला:** सुमंती भगत और प्रीति बाला गाड़ी।

नई पीढ़ी के लिए मील का पत्थर होगी यह कार्यशाला
समारोह में जुटे शहर के प्रबुद्ध शिक्षाविदों व कलाकारों ने इस पहल को खूब सराहा। वहीं, जाने-माने साहित्यकार महादेव टोप्पो, डॉ. कमल बोस और डॉ. विनोद कुमार ने संयुक्त रूप से कहा कि कला के माध्यम से इतिहास का यह दस्तावेजीकरण आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मार्गदर्शिका बनेगा, जो उन्हें अपनी जड़ों और महानायकों पर गर्व करना सिखाएगा।

कैनवास पर जीवंत हो रही धरती आबा की जीवन गाथा



रांची विश्वविद्यालय परिसर स्थित डॉ. रामदयाल मुंडा कला केंद्र में भगवान बिरसा मुंडा के जीवन पर आयोजित यह दिवसीय चित्रकला कार्यशाला चल रही है। 27 मई को इसका समापन होगा। कार्यशाला में पैतकर चित्रकला परंपरा से शालिनी सोय, किशोर गायन एवं गणेश गायन, जादू पटिया चित्रकला से सुधा

कुमारी, चित्रा टोप्पो एवं विद्यासा कुमारी, सोहराई चित्रकला से मनीष महतो एवं अनीता देवी तथा उरांव चित्रकला से सुमंती भगत एवं प्रीति बाला गाड़ी भाग ले रही हैं। झारखंड की पारंपरिक कला विधाओं में कलाकार इस तरह का प्रयोग से रहा है। केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. कुमार संजय झा कहते हैं कि जनजातीय सभ्यताओं एवं उनकी संस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति संस्थान प्रतिबद्ध है। कार्यशाला बिरसा मुंडा के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को कैनवास पर उकेरते हुए लोगों को उनके संघर्ष, विचारधारा एवं सामाजिक योगदान से परिचित करा रही है। भारत में इस प्रकार का प्रयोग पहले बहुत कम हुए हैं, जबकि संस्थान पूर्व में भी जनजातों एवं पारंपरिक कला पर महत्वपूर्ण पहल कर चुका है। इसे क्रम में सतेकम पुनर्जागरण के निदेशन में राज्य जनजाति के कलाकारों का प्रतिनिधि 1200 मीटर लंबा "महाभारत स्कॉल" एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। कार्यशाला में निर्मित कलाकृतियां भगवान बिरसा मुंडा के आदर्श एवं जीवन दर्शन को समाज तक



पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। विपरीत कुमारी कहते हैं, इस कार्यशाला में मेरा अनुभव बहुत अच्छा रहा। मुझे पहले ऑर्टिस्टों से सीखने को भी मिला। इस तरह का कार्यक्रम शोध में और सीख चाहिए। मैंने जादू पटिया शैली में बिरसा मुंडा को आधुनिकी युगक कृतियों के साथ मिला करते हुए दिखाया है। कलेक्टर के जवाब से अब सुमंती भगत उरांव शैली में चित्रण कर रही हैं। भगवान बिरसा के जीवन का चित्रण कर रही हैं। सुमंती कहती हैं, एक तो मैंने भगवान बिरसा मुंडा के जन्म का चित्रण किया है जिसमें जन्म के बाद माँ के स्तन



देखने आते हैं। दूसरा भगवान बिरसा मुंडा किस तरह से गांव के जंगल, खेत में एक साधारण मनुष्य का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। गांव में अन्य बच्चों की तरह गाय बैल जंगल में चराते हुए चित्रण किया है और उरांव शैली में दिखाने को कोशिश की है। सोहराई से अब सुधा कुमारी भगवान बिरसा मुंडा की गिरफ्तारी को जमाने पीछे शैली में कैनवास पर उकेर रही हैं। किशोर गायन जेल में बंद बिरसा मुंडा के जीवन को जीवंत कर रहे हैं। मनीष कुमारी महतो चित्रकला से हैं। भगवान बिरसा मुंडा के जीवन और संघर्ष को कला के माध्यम से



समझने का अवसर मिला। सोहराई पेंटिंग में धरती आबा के रूप में सम्मिलित बिरसा मुंडा, फांदों से रेशों को संघीकृत करते हुए और बिरसा मुंडा के पल्लवगद्दी को प्रस्तुत किया है। अनीता देवी ने भी सोहराई पेंटिंग में बिरसा मुंडा को गांव के बीच उभरते देते हुए दिखाया है। अराव चित्रकला में भी भगवान बिरसा मुंडा के उलगुलान के रूप को जीवंत किया है। यह पैतकर शैली है। प्रीति बाला गाड़ी ने भी उरांव शैली में बिरसा के जीवन को जीवंत कर रही हैं। —संजय कुमार



हिन्दुस्तान

19-5-2026

नई पीढ़ी तक जाएगी 'बिरसा' विचारधारा

बोले भूटिया

■ टीआरआई मोरहाबादी में 10 दिवसीय चित्रकला कार्यशाला शुरू
■ विभिन्न कला शैलियों के माध्यम से देख सकेंगे बिरसा मुंडा के संघर्ष

रांची, विशेष संवाददाता। भगवान बिरसा मुंडा के जीवन, संघर्ष और विचारों को जनजातीय पारंपरिक चित्रकला के माध्यम से अभिव्यक्त करने के उद्देश्य से इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय केंद्र, रांची और डॉ रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, मोरहाबादी की ओर से आयोजित दस दिवसीय चित्रकला कार्यशाला की शुरुआत सोमवार को संस्थान के सभागार में हुई। यह कार्यशाला 27 मई तक चलेगी।

मुख्य अतिथि संस्थान के निदेशक कर्माजिम्मा भूटिया ने कहा कि झारखंड की जनजातीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में पारंपरिक कला रूपों की महत्वपूर्ण भूमिका है। कहा, कार्यशाला में निर्मित कलाकृतियां भगवान बिरसा मुंडा के जीवन और समाज पर उनके प्रभाव को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत



डॉ रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान में दस दिवसीय चित्रकला कार्यशाला की शुरुआत सोमवार को हुई। यह कार्यशाला 27 मई तक चलेगी।

करेंगी। उपनिदेशक मोनिका रानी टूटी ने कहा कि सोहराय, जादू पटिया और पैतृक जैसी पारंपरिक चित्रकला शैलियां बिरसा मुंडा के जीवन और विरासत को स्वदेशी कलात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से जीवंत रूप देंगी। कार्यशाला की संकल्पना वरिष्ठ कलाकार और डीएसपीएमयू के

प्रदर्शन व दृश्य कला विभाग के अतिथि शिक्षक सीआर हेम्ब्रम ने की है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय केंद्र, रांची के क्षेत्रीय निदेशक डॉ कुमार संजय झा, प्रो एसएन मुंडा, डॉ सोमा सिंह मुंडा, महादेव टोप्पो, डॉ कमल कुमार बोस व डॉ बिनोद कुमार ने भी कलाकारों का उत्साहवर्धन किया।